

घाना

बांस से साइकिल बनाने वाली महिला

बर्नीस दापाह ने घाना के ग्रामीण बच्चों के लिए विशाल घास से साइकिलें बनाईं, जिससे घंटों का पैदल सफर बचा और पर्यावरण के अनुकूल रोजगार मिला।

कहाँ कुमासी, अशांति क्षेत्र

कौन बर्नीस दापाह, जो घाना में बच्चों को स्कूल पहुंचाने के लिए बांस की साइकिलें बनाती हैं

कब 2009 से आज तक

4 मिनट में पढ़ें

पहला अध्याय

कहानी

घाना के ग्रामीण इलाकों में बहुत से बच्चे हर सुबह स्कूल पहुंचने के लिए तीन घंटे पैदल चलते हैं। वे तपती धूप में धूल भरी सड़कों पर चलते हैं। जब तक वे कक्षा में बैठते हैं, वे पूरी तरह थक चुके होते हैं। कई बच्चे पढ़ाई पूरी करने से पहले ही स्कूल छोड़ देते हैं।

बर्नीस दापाह इस लंबी दूरी को अच्छी तरह जानती थीं। वह कुमासी के पास अपने दादाजी के साथ पली-बढ़ीं। बचपन में वह हर दिन मीलों पैदल चलती थीं। फिर उनके दादाजी ने उन्हें एक पुरानी साइकिल खरीदकर दी। इसने उनके कई घंटे बचाए और उनकी जिंदगी बदल दी।

स्टील से भी मजबूत

बर्नीस ने 2009 में अपनी कॉलेज की पढ़ाई पूरी की। ज्यादातर पढ़े-लिखे युवा शहर में दफ्तर की नौकरी खोज रहे थे। लेकिन बर्नीस गांव के बच्चों की मदद करना चाहती थीं। वह अपने इलाके के युवाओं को पक्का काम भी देना चाहती थीं।

विदेश से धातु के साइकिल फ्रेम मंगवाना बहुत महंगा था। लेकिन पास के जंगलों में जंगली बांस खूब उगता था। बांस तेजी से बढ़ने वाली एक घास है। यह कच्ची सड़कों के झटकों को लोहे से कहीं बेहतर सोखता है। वजन के हिसाब से यह स्टील से भी ज्यादा मजबूत होता है।

> हम ऐसा विचार लाना चाहते थे जिससे अन्य युवाओं के लिए भी रोजगार बन सके।
>
> बर्नीस दापाह, द गार्जियन में

10

हर कटे बांस के बदले लगाए गए नए पौधे

2009

जिस वर्ष कार्यशाला शुरू हुई

3

स्कूल के दैनिक सफर में बचे घंटे

युवा कारीगरों को प्रशिक्षण

शुरुआत में लोगों को इस विचार पर भरोसा नहीं हुआ। दोस्तों ने कहा कि घास कभी किसी वयस्क का वजन नहीं संभाल सकती। लेकिन बर्नीस ने युवा कारीगरों को साथ लिया और पहला मजबूत फ्रेम तैयार किया। टीम ने बांस को कीड़ों से सुरक्षित किया और जोड़ों को प्राकृतिक रेशों से मजबूती से बांधा।

साइकिलें हल्की, आरामदायक और बहुत टिकाऊ साबित हुईं। बर्नीस ने कुमासी के पास कार्यशालाएं शुरू कीं। उन्होंने गांव की महिलाओं और बेरोजगार युवाओं को काम पर रखा। सबने अपने हाथों से बांस काटना, तराशना और साइकिल बनाना सीखा। इनमें आधी से ज्यादा युवा महिलाएं थीं।

भविष्य की ओर सफर

टीम ने धरती की देखभाल का भी पूरा ध्यान रखा। वे जितने बांस काटते, उसके बदले 10 नए पौधे लगाते थे। बांस तेजी से बढ़ता है और मिट्टी को बांधकर रखता है। यह हवा को साफ करता है और नदियों के किनारे मिट्टी का कटाव रोकता है।

अपने स्कूल कार्यक्रम के जरिए बर्नीस ने दूरदराज के गांवों के बच्चों को साइकिलें बांटीं। जो बच्चे पहले तीन घंटे पैदल चलते थे, वे अब 30 मिनट में स्कूल पहुंच जाते हैं। कक्षाओं में हाजिरी बढ़ी और बच्चों के अंक सुधरे। परिवारों के पैसे बचे और लड़कियों ने आगे तक पढ़ाई की। घास की एक साइकिल ने तरक्की का रास्ता खोल दिया था।

कब क्या हुआ

- **1990** बर्नीस स्कूल जाने के लिए हर दिन मीलों चलती हैं, जब तक उनके दादाजी उन्हें साइकिल नहीं दिलाते।
- **2009** बर्नीस कॉलेज पूरा करती हैं और कुमासी में बांस की साइकिल बनाना शुरू करती हैं।
- **2013** संयुक्त राष्ट्र ने इस पर्यावरण-अनुकूल पहल को अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित किया।
- **आज** कार्यशालाएं स्थानीय लोगों को हुनर सिखाती हैं और दुनियाभर में बांस की साइकिलें भेजती हैं।

दूसरा अध्याय

यह कहानी ख़ास क्यों है

बांस की ये साइकिलें केवल दिखावा नहीं हैं। ये एक साथ तीन बड़ी समस्याओं को हल करती हैं: स्कूल की लंबी दूरी, ग्रामीण बेरोजगारी और प्रदूषण।

जितने बांस काटे जाते हैं, कारीगर उसके बदले 10 नए पौधे लगाते हैं। ये साइकिलें बच्चों को स्कूल पहुंचाने के साथ-साथ प्रकृति को भी संवारती हैं।

हमारी राय

आगे बढ़ने के लिए दूर देशों से महंगी चीजें मंगवाने की जरूरत नहीं है। बस यह देखिए कि आपके आसपास क्या मौजूद है।

तीसरा अध्याय

हम क्या सीख सकते हैं

1 आसपास की चीजों का उपयोग करें

बर्नीस ने आयातित स्टील का इंतजार नहीं किया। उन्होंने पास के जंगलों में उगने वाले बांस से साइकिल बनाई।

यह आज़माएँ: आज अपने घर या काम की किसी समस्या को उन्हीं चीजों से सुलझाएं जो पहले से आपके पास हैं।

2 अपनी पुरानी मुश्किलों को याद रखें

बर्नीस को बचपन में घंटों पैदल चलना याद था, इसलिए उन्होंने अगली पीढ़ी के बच्चों के लिए साइकिलें बनाई।

यह आज़माएँ: इस हफ्ते किसी ऐसे व्यक्ति की मदद करें जो उस परेशानी से जूझ रहा हो जिसे आप पार कर चुके हैं।

3 जितना लें, उससे ज्यादा लौटाएं

हर एक कटे हुए बांस के डंठल के बदले उनकी कार्यशाला 10 नए पौधे लगाती है।

यह आज़माएँ: जब भी कोई काम पूरा करें, तो उस जगह या व्यवस्था को पहले से अधिक बेहतर और साफ छोड़कर जाएं।

4 दूसरों को हुनरमंद बनाएं

बर्नीस ने ग्रामीण महिलाओं और युवाओं को हाथ से साइकिल बनाना सिखाकर उन्हें जीवनभर का हुनर दिया।

यह आज़माएँ: इस हफ्ते बीस मिनट निकालकर किसी साथी या पड़ोसी को कोई उपयोगी काम या हुनर सिखाएं।

साथ ले जाने वाली एक बात

सबसे साधारण पौधा भी सबसे बड़े सपनों को मंजिल तक पहुंचा सकता है।

स्रोत (अंग्रेज़ी में)

CNN
Bamboo bikes turn around fortunes for working women in Ghana (2014)

The Guardian
Ghana's bicycle which is creating jobs while it saves the soil (2015)

World Economic Forum
Bernice Dapaah - Young Global Leader profile

तथ्य-जाँच नोट: सभी प्रमुख स्रोत बुनियादी तथ्यों पर सहमत हैं। समय: यह पहल 2009 में शुरू हुई और 2013 से इसे संयुक्त राष्ट्र के पुरस्कार मिलने लगे। पौधारोपण: सीएनएन, द गार्जियन और यूएनएफसीसीसी पुष्टि करते हैं कि हर एक कटे बांस के बदले 10 नए पौधे लगाए जाते हैं। बचपन:

बर्नीस का बचपन में पैदल चलना और दादाजी द्वारा साइकिल दिलाना कई साक्षात्कारों में दर्ज है। उद्धरण बर्नीस दापाह द्वारा 2015 में द गार्जियन को दिया गया था। “हमारी राय” वाली पंक्तियाँ हमारी अपनी व्याख्या हैं। बाकी सब ऊपर दिए स्रोतों से है।